संवाद

पत्रकारिता, जनसंचार एवं नवमीडिया स्कूल, केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला

संस्थापक : पत्रकारिता एवं क्रियात्मक विभाग अब आप (छात्र व अध्यापक) भी विश्वविद्यलय के अखबार में अपनी समाचार रिपोर्ट, लेख , कविताएं व विभाग की उपलब्धियां आदि समावेशी और गैर समावेशी ३०० से ५०० शब्दों में लिखित रूप में, हिंदी या अंग्रेजी किसी भी भाषा में दे सकते हैं। आपके द्वारा भेजी गयी सामग्री सम्पादकीय निर्णय के अनुसार छापी जाएगी। आप हमे अपनी लिखी हुई सामग्री इस ई-मेल आईडी पर भेज सकते हैं :

voicesamvaad@gmail.com

de-layer

For Voice E-paper and other stories, visit our blog :
www.de-layer.blogspot.in

विश्वविद्यालय को मिली अपनी ज़मीन

हिमांशु शर्मा

केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश को 10 साल बाद आखिरकार जमीन मिल गयी जिसकी आधारशिला केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने देहरा और धर्मशाला में रखी। इस मौके पर केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री ने कहा की केंद्रीय विश्वविद्यालय के दोनों परिसर 3 वर्षों में बन कर तैयार होंगे।

इस मौके पर जावड़ेकर समेत हिमाचल के मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर एवं सांसद अनुराग ठाकुर मौजूद थे। अपने संबोधन में हमीरपुर से सांसद अनुराग ठाकुर ने दावा किया की 70% परिसर देहरा में और 30% धर्मशाला के पास स्थित जदरांगल में होगा। उन्होंने कहा की इस से दोनों क्षेत्र शैक्षणिक एवं आर्थिक विकास की ओर अग्रसर होंगे। हालाँकि कैंपस के लिये जदरांगल में 2400 एकड़ से आधिक जगह चिन्हित की गयी है, पर वर्तमान में सरकार लगभग 50 एकड़ गैर वन भूमि का प्रबंधन कैंपस के लिये करेगी। देहरा में लगभग 200 एकड़ जमीन पहले ही CUHP के नाम स्थानांतरित हो चुकी है।

इस अवसर पर जवेड़कर ने कहा की CUHP के

प्रकाश जावड़ेकर (प्रतीकात्मक चित्र)

भवन निर्माण के लिये वन मंजूरी तब ही दे दी गयी थी जब वे केन्द्र में वन एवं पर्यावरण मंत्री थे और आज विश्वविद्यालय परिसर को जल्द पुरा करने के लिये केन्द्र सरकार हर संभव सहायता प्रदान करेगी। कुलपति, प्रो कुलदीप चन्द्र अग्निहोत्री ने कहा की परियोजना की अनुमानित लागत 1300 करोड़ रुपय होगी। उन्होंने कहा की व्यास नदी का संस्कृत नाम 'विपाशा' है और नदी के किनारे बनने वाले इस परिसर का नाम इस पर रखा जायेगा। यूँ तो केंद्रीय विश्वविद्यालय 2010 में अस्तित्व में आया था तब से यह शाहपुर और धर्मशाला में अस्थायी परिसरों से कार्यशील है ।स्थायी परिसर उप्लब्ध ना होने के कारण विश्वविद्यालय को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था।

वर्तमान में 2000 से आधिक विद्यार्थी विश्वविद्यालय के 2 अस्थायी परिसरों में पढ़े रहें है। भविष्य में विवि में 14 स्टडी स्कूल और लगभग 70 अध्यन विभाग होंगे। इसके अलावा 40 के करीब अध्यन केंद्र होंगे। यह देखते हुए, धर्मशाला और शाहपुर में छात्रों एवं संकाय सदस्यों ने खुशी व्यक्त की है की आखिरकार केन्द्रीय विश्वविद्यालय को 10 साल बाद स्थयी कैंपस मिला ।

हिमाचल में बढ़ते हिंसक का जिम्मेदार कौन?

ऋतू शर्मा

अब तक हमारी सुरक्षा बलों पर जो बड़े हमले हुए है उनमें उरी अटैक व पठानकोट अटैक का नाम आता है। इन हमलों के बाद भारत से जो सैन्य कार्यवाही की गई थी उसको लेकर काफी तेज़ राजनीतिक बयानबाज़ी हुई थी। जिसमें कुछ दलों ने यह दावा किया की हमने सर्जिकल स्ट्राइक की है तथा कुछ दलों ने कहा की बीते दौर में हमने भी सर्जिकल स्ट्राइक की है व आम जनता भी गुस्से से भरी हुई सड़कों पर उतरी थी। उसी तरह का गर्माता माहौल जैसा की हर आतंकी हमले के बाद भारत में देखने को मिलता है, वैसा ही पुलवामा आतंकी हमले के बाद एक बार फिर भारत में दिख रहा है और इस बार चपेट में देवभूमि हिमाचल भी है।

पुलवामा हमले के बाद पूरे देश के लोग कहीं विरोध करके व कहीं कैंडल मार्च करके अपना गुस्सा निकाल रहे है। हिमाचल प्रदेश में भी स्कूली शिक्षा ले रहे बच्चों से लेकर विश्वविद्यालयों तक के छात्र, शिक्षक व सभी हिमाचल वासी शोक जताते हुए विरोध कर रहे हैं। १५ फ़रवरी को राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला के बहार महाविद्यालय के बच्चों द्वारा भी विरोध में पाकिस्तान मुर्दाबाद के नारे लगाए गए। १८ फ़रवरी को केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश के सोशियोलॉजी विभाग के छात्रों ने पुलवामा हमले में हुए शहीद सैनिकों के लिए संवेदना पत्र बनाए।जंहा एक तरफ सारा देश शोक में डूबा है वहीं कुछ गुस्साए हुए लोग अपने गुस्से पर काबू न पाते हुए असमाजिकता फैला रहे हैं। कहा जाता है की फौजी का कोई धर्म नहीं होता लेकिन फिर भी पुलवामा हमले के बाद धर्म और जातिवाद के नाम पर यंहा पर काफी असमाजिकता देखने को मिल रही है। इस हमले के बाद हिमाचल में प्रदेश स्तर पर एक वीडियो काफी वायरल हो रही है जो कि कथित तौर पर पालमपुर की बताई जा रही है। वीडियो में दो कश्मीरी युवकों पर स्थानीय लोग डंडो से हमला करते नज़र आ रहे हैं। कश्मीरी युवक दर्द से चिल्लाते सुनाई दे रहे हैं पर स्थानीय लोग बिना उनकी सुने उन्हें डंडो से पीटते व जम्मू भाग जाओ कहते सुनाई दे रहे हैं।

अलग-अलग मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार पालमपुर व अन्य बहुत सी तहसीलों की कुछ पंचायतों ने अपने गावों व साथ लगती सीमाओं में सब तरीके के कश्मीरी जो हिन्दुस्तान में बसे हुए हैं उन्हें गाँव में आने से मना कर दिया है। धर्मशाला के मैक्लोडगंज में रह रहे कश्मीरियों को भी यंहा से निकाला जा रहा है। देश के बहुत से शिक्षण संस्थानों ने भी कश्मीरी छात्रों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

देवभूमि हिमाचल प्रदेश जो की अपने शांत स्वभाव से जाना जाता है यंहा भी पिछले कुछ समय से धर्म, जातिवाद व राष्ट्रवाद के नाम पर होने वाली घटनाएं भी हिंसक रूप लेती नज़र आ रही हैं। चाहे वह कुल्लू में देवता का फूल हरिजन युवक पर गिरने से लोगों द्वारा धर्म के नाम पर की गई उसकी जमकर पिटाई हो या या पालमपुर में दो कश्मीरियों पर स्थानीय लोगों द्वारा किया गया डंडो से हमला।

कचरे के ढेर से बढ़ती निवासियों की परेशानी

कचरे का ढेर (प्रतीकात्मक चित्र)

प्रिया नागर

धौलाधार कि खुबसूरत वादियों में समाए धर्मशाला शहर जिसे 'डिवाइन धर्मशाला' भी कहा जाता है की करीबी तस्वीर महज़ पहाड़ों की सफ़ेद चादर की तरह चमकदार नहीं है। जहाँ एक तरफ इसे 'ईज़ ऑफ़ लिविंग इंडेक्स ' में 56वां स्थान मिला है। वहीँ दूसरी तरफ यहाँ हिमाचल रोड ट्रांसपोर्ट कॉरपोरेशन वर्कशॉप के पास एक गांव, सुधेड़ में गैरकानूनी तरीके से कचरा फेकने से आम जनता को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। गौर करने वाली बात ये है कि कई वर्षों से यहाँ नगर निगम द्वारा वन क्षेत्र में कचरा फेकने से कूड़े का ढेर बन गया है।

"कचरा फेंका भी जाता है और जलाया भी, प्लास्टिक, कपड़ा और हर तरीक़े के कचरे को नष्ट करने के लिए गांव के पास ही जलाया जाता है।" सुधेड़ कि निवासी सीमा ने बताया। "हानिकारक धुंए से कई लोगों को सांस कि बीमारी भी हो रही हैं। " सीमा ने आगे कहा। करीबन 5 -6 साल पहले ठोस कचरे को खत्म करने के लिए कतरन संयंत्र भी लगाया गया था जो कि आज तक भी कार्य में लाया नहीं गया है। कचरा जलाने के अलावा खडों में फ़ेंक दिया जाता है जिससे पीने का पानी भी प्रदुषित हो रहा है। "पिछले वर्ष दुषित पानी पीने कि वजह से गांव में महामारी जैसा माहौल हो गया था। लोग पेट खराब, दस्त एवं पीलिया जैसे रोगों का शिकार हो गए थे ।" महेश जो कि लकड़ी का काम करता है उसने बताया।नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने 2 जनवरी को नगर निगम, धर्मशाला और हिमाचल प्रदेश राज्य प्रदुषण नियंत्रण बोर्ड सुधेड़ में कचरे के अवैध डंपिंग के मामले को देखने के लिए कहा, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा था। यह कदम सुनीता ठाकुर, प्रधान, बागेश्वरी महिला मंडल के आवेदन पर लिया गया। गांव में खड़ के पानी के अलावा और कोई पीने के पानी का स्त्रोत भी नहीं हैं।

आसपास के सभी जगहों जैसे कोतवाली बाज़ार के निचले हिस्से के निवासियों को उसी पानी पर निर्भर होना पड़ता हैं। बारिश के वक़्त तो गंदगी बह कर साफ़ पानी में मिल जाती है जिसकी बदबू को बर्दाश्त करना बड़ा मुश्किल है। निवासियों ने यह भी कहा कि ये साइट तो मच्छरों का प्रजनन स्थल बन गई है।"

प्रशासन की ओर झांकती विजय निगाहें

निकिता सिंह

धर्मशाला के कचहरी से गुजरते समय आपकी नज़रे ज़रूर उन दो लड़कियों पर पड़ी होगी,जो कि पिछले 5 साल से उस सब्ज़ी मंडी में अपना ठेला लगाती हैं। आपके ज़हन में ज़रूर उनके बारे मे कुछ न कुछ ज़रूर आया होगा । जिन में से एक का नाम है अमरजोत कौर । अमरजोत कौर सिर्फ असल जिंदगी की नायिका नही है बल्कि उन्होंने खेल कूद में भी अपना ओर अपने माता पिता का नाम भी काफी हद तक रोशन किया है। अमरजोत और उनकी बहनो की ज़िन्दगी आम लोगो की ज़िंदगी से अलग है। अमरजोत अपनी दो बहनों ओर दो भाइयो के साथ एक छोटे से किराये के मकान में रहती है।

सर पर माता पिता का साया न होने के कारण उन्हें इस व्यवसाय को अपनाना पड़ा, ताकि वो अपने भाई बहनों का पेट पाल सके । अमरजोत और उनकी बहनो की कहानी यही तक सिमित नही है, यह कहानी है उस जाबाज़ लड़की की जिसके चेहरे पर दुख की एक भी शिकंज नही मिलेगी , बल्कि कुछ कर दिखाने का जज्बा मिलेगा।

अमरजोत दसवी कक्षा तक पढ़ी है। परिवार के हालात नाजुक होने के कारण और पिताजी की बीमारी दबे उन्हें अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी। इन्होंने सरकारी योजना के तहत पार्लर का काम सिखा और फिर अपने घर का पालन पोषण करने के लिए जम्मू में भी काम किया ।अमरजोत कौर असल जिंदगी में चैंपियन का किरदार निभाने के साथ साथ राज्य स्तरीय चैंपियनशिप और राष्ट्रीय बास्केटबाल चैंपियनशिप में भी अपना सहयोग दे चुकी है । अमरजोत की छोटी बहन 11वी के इम्तिहान की तैयारी में

सब्ज़ी बेचती अमरजोत (चित्र : निकिता सिंह)

जुटी हुई है। अमरजोत के परिवार को किसी भी परिजनों या रिश्तेदारों का सहयोग नही है। हिमाचल की बेटी अमरजोत ने हिमाचल और अपने ज़िला को प्रस्तुत किया है।उन्होंने 2009 में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला शाहपुर में हुई प्रतियोगिता में धर्मशाला को प्रस्तुत किया है, जिसमे वो विजेता के रूप में उभर कर आई है। ये 2010 में मंडी में खेल चुकी है। राज्य स्तरीय महिला खेल समाहरोह 2010-11 में उनका पहला स्थान रहा है। 2010 कोटला ने हुए जिला ग्रामीण प्रतियोगिता में भी ये दूसरे स्थान पर रह चुकी है। जो कि भारतीय खेल प्राधिकरण नेताजी सुभाष राष्ट्रीय खेल संस्थान पटियाला द्वारा आयोजित किया गया था। 2013 आंचलिक टूर्नामेंट में अमरजोत बैडमिंटन खेल चुकी है और प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

इन्होंने 2011 में जयपुर में हुए तीसरे राष्ट्रीय ग्रामीण टूर्नामेंट में हिमाचल को प्रस्तुत किया है। राइट में हुए जिला महिला खेल उत्सव 2010 में पहले स्थान में आई है। इतनी मेहनत और मुशक्त के बाद हिमाचल की बेटी अमरजोत एक आम या साधारण नागरिक की तरह धर्मशाला की छोटी सी सब्ज़ी मंडी में सब्जी बेच कर अपने परिवार का पालन पोषण कर रही है व अपने छोटे भाई बहनो को काबिल ओर शिक्षित बनाने की कोशिश में है।

अमरजोत चाहती है वह अपने प्रमाण पत्रों का प्रयोग करके एक अच्छी नौकरी हासिल करें और सरकार उनकी निश्चित सहायता करें। वो चाहती है कि सरकार द्वारा एक हकदार नौकरी उसे मिले। जिससे वह अपने परिवार का पालन पोषण अच्छे से कर सके।

Design & Layout:
Archna Kumari
Priya Nagar

Sub editors:
Neha Thakur
Deeksha Kulshrestha

Reporters:
Priya Nagar
Reena Thakur
Neha Thakur
Deeksha Kulshrestha

डिफेन्स के शिखर पर महिलाओं का परचम

जे मंजुला (दाएं) टेसी थॉमस (बाएं)

दीक्षा कुलश्रेष्ठ

आज महिलाऐं उन्- उन् क्षेत्रों में भी सबसे आगे हैं, जिनमें कभी सोचा भी नहीं गया था। ऐसा ही एक क्षेत्र है डिफेन्स का क्षेत्र। जब भी डिफेन्स का ज़िक्र होता है तो ज़्यादातर पुरुषों को वाहवाही दी जाती हैं क्योंकि भारत की महिलाओं का नाम आज भी इस क्षेत्र में कहीं गुम है। ऐसा नहीं है कि महिलाओं का योगदान इस क्षेत्र में कम है बल्कि तमाम महिलाएं हैं जो कि अपनी सेवाएं डिफेन्स के क्षेत्र में दे रही हैं | आज डिफेन्स में महिलाए अपना परचम लहरा रहीं हैं |

एक नाम जो डिफेन्स शब्द सुनते ही ज़ेहन में आता है वह है ' टेसी थॉमस' (महानिदेश, बेमानिक प्रणाली) का। इनका जनम अप्रैल 1964, केरला में हुआ था | थॉमस ने M.tech तक शिक्षा ग्रहण करी है | इन्होंने अपनी आरंभिक शिक्षा सेंट मैकिल हाईयर सेकेंडरी स्कूल से ग्रहण करी, फिर इन्होंने इंजीनियरिंग, गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज, त्रिशूर से की व साथ ही एमटेक गाइडेड मिसाइल में पुणे से करी। 1998 में इन्होंने डी आर डीओ में काम करना शुरू किया। 2011 में मिसाइल लॉन्चिंग की यह प्रोजेक्ट निदेशक भी थी । इसी के बाद इन्हें ' अग्नि पुत्री ' का नाम भी दिया गया। थॉमस भारत की दूसरी महिला निदेशक है | इन्हें बहुत ही कम लोग जानते हैं क्योंकि इन्होंने अपना अब तक का सारा जीवन अग्नि मिसाइल

को बनाने और उसके सुधार में ही व्यतीत किया है | इनके गृहस्थ जीवन की बात की जाए तो इनके पति सरोज, नेवी में कमांडर हैं। इनका एक बेटा टोजस बीटेक कर रहा है। वह अपनी माँ से बहुत ही प्रेरित है और वह भी इसी क्षेत्र में जाना चाहता है। थॉमस को लाल बहादुर शास्त्री नेशनल अवार्ड से नवाज़ा भी जा चुका है। बात को आगे बढ़ाएं तो जे मंजुला को कोई कैसे भूल सकता है जो भारत की पहली महिला महानिदेशक हैं । यह उन महिलाओं में से एक हैं, जिन्होंने भारतीय सेना को आदुनिकतम इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम से लैस करने का काम को चुना। मंजुला का जनम १९६२ में आंध्र प्रदेश में हुआ था | इन्होंने अपनी जिंदगी में बहुत उतार -चढ़ाव देखे क्योंकि वह एक ऐसा दौर था जब महिलाओं का पढ़ना और आगे बढ़ना अच्छा नहीं समझा जाता था। फिर भी उनके माता-पिता ने समाज की चिंता न कर उन्हें पढ़ाया और इसी कारण वह आज इस मुकाम पर पहुंची है |

मंजुला ने इलेक्ट्रॉनिक्स और कम्युनिकेशन इंजिनीरिंग में पोस्ट ग्रेजुएशन किया है। उनकी जिम्मेदारियों में भारतीय सेना के लिए रेडार आत्मसुरक्षित, जैमर, इलेक्ट्रो ऑस्टिक यूनिट इत्यादि विकसित करना है। मंजुला को परफॉरमेंस एक्सेलेन्ट वैज्ञानिक ऑफ दी ईयर अवार्ड 2011 एवं इंडिया टुडे वीमेन संमिट अवार्ड 2014 से नवाज़ा जा चुका हैं।

इन दो महिलाओं के डिफेन्स क्षेत्र के योगदान से यह तो साबित होता है कि हर कामयाबी अखबार के पन्नों पर छपी नहीं होती कई कामयाब कहानियां मशीनों के पीछे देश को सुरक्षित बनाने में जुटी होती हैं।

छदम विज्ञापनों का समाज पर बढ़ता प्रभाव

अर्चना कुमारी

आज का दौर भूमंडलीकरण का दौर है और आज के इस दौर में उत्पादन के साधनों का विकास तेज़ गति से हो रहा है | जिसके कारण यह आवश्यक हो गया है कि इन उत्पादित हो रही वस्तुओं को लोगों तक पहुँचाया जाए | इस कार्य को पूरा करने में आज विज्ञापन एक अहम हिस्सा निभा रहे हैं | विज्ञापन किसी उत्पादन को बेचने या प्रदर्शित करने के उदेश्य से किया जाने वाला प्रचार है | यह हमारी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी का अहम हिस्सा बन चुके हैं |

चलते-फिरते हम हजारों क़िस्म के विज्ञापनों को देखते हैं | यह अपने उत्पाद को आकर्षित ढंग से प्रस्तुत करते हैं | आज उपभोक्तावादी संस्कृति का दौर है और इस दौर में हमारी जिंदगी में कुछ ऐसे विज्ञापन भी होते हैं जो हमें आंतरिक रूप को लुभाने की कोशिश करते हैं | इसे हम छदम विज्ञापन कहते हैं | यानि वह विज्ञापन जो छुपे हुए तरीकों से प्रतिबंधित वस्तुओं को लोगों तक पहुंचाती है। उदाहरण के तौर पर कल्व्वर्ग्स अपने गिलास से लोगों को लुभाने की कोशिश करता है | मैक डबल्स शराब होते हुए भी म्यूजिक सीरिज के रूप से खुद को लोगों तक पहुंचाने की कोशिश करता है तथा अन्य विज्ञापन पैकजिंग से अपनी ओर आकर्षित करते हैं| यह अन्य विज्ञापनों की तुलना में जो साधारण है से अधिक आकर्षित करते हैं | यह विज्ञापन हमारी स्थिति पर काफी असर डालते हैं तथा हमारे रहन-सहन को काफी ज्यादा प्रभावित करते हैं |

हालाँकि सरकार ने इस प्रकार के विज्ञापनों के ऊपर समय-समय पर बहुत से कानून बनाए हैं | जैसे कोटपा आधिनियम 2003 में बनाया गया था | यह आधिनियम सिगरेट,तम्बाकू उत्पादन विज्ञापन को प्रतिबंधित करने व धुम्रपान व अन्य उत्पाद से होने वाले बुरे प्रभावों के बारें में जागरूक करने के लिए बनाया गया था | इसके अंतर्गत धारा चार में सार्वजानिक स्थलों में जैसे अस्पताल, खेल का मैदान, स्कूल, कैंटीन, सरकारी, व गैर सरकारी संस्थानों पर धुम्रपान निषेध है | इस कानून अनुसार 18 साल के से कम बच्चों को तम्बाकू और सिगरेट बेचना एक संगीन अपराध है| इसका उल्लंघन करने वालों को 200 रूपए का जुर्माना हो सकता है | इसके अलावा भारत सरकार द्वारा साल 2007-2008 में राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम (एनटीसीपी) को प्रारम्भ किया गया था | जिसके उदेश्य थे तम्बाकू सेवन के नुकसानदायक प्रभावों के बारे में जागरूकता पैदा करना और तम्बाकू उत्पादों के उत्पादन एवं आपूर्ति में कमी करना| इस प्रकार और भी कई समय-समय पर कार्यक्रम चलाए गए | परंतु तमाम कोशिशों के बावजूद गाहे-बगाहे समाज में आज भी यह कुरीतियाँ विद्मान हैं | इसका प्रमुख कारण छदम विज्ञापनों का बढ़ता प्रभाव है। विज्ञापन भावनात्मक अपील से इस तरह पेश किए जाते हैं कि लोग भ्रमित हो जाते हैं| विज्ञापन में अक्सर लड़कियों को दिखाया जाता है|और दोस्ती कायम रखने के लिए शराब का विज्ञापन दर्शाया जाता है |

वर्तमान समय में वह तमाम प्रकार के विज्ञापन जो प्रतिबंधित की श्रेणी में आते हैं वह सोशल मीडिया पर धड़ल्ले से जारी है | जिससे इसका असर सीधे तौर पर युवा पीढ़ी पर हो रहा है | इस प्रकार इसके दुष्परिणाम को जानते हुए भी कठोर कार्यवाही नहीं हो रही है | अगर इस तरह समय रहते इन पर कार्यवाही नहीं की गई तो आने वाले समय में काफ़ी भयंकर समस्या उत्तपन हो सकती हैं जिससे निजात पाना काफी मुश्किल होगा |